# Ravindra's IAS

# इतिहास

*( प्रारंभिक परीक्षा हेतु )*

## UPSC & STATE PSC'S


**OFFICE**

102,8-9, 2nd floor, Ansal Building, Mukherjee Nagar,Delhi-110009
Mobile Number:- 8700170483, 9953101176
Website:- www.ravindrainstitute.com
Facebook / Twitter/ Instagram / Telegram- Ravindras IAS institute, YouTube-RavindraIAS

# Ravindra's IAS

## विषय सूची

### प्राचीन भारत


- इतिहास के साक्ष्य एवं स्त्रोत 3
- प्रस्तर युग 8
- सैन्धव सभ्यता 13
- वैदिक काल 19
- महाजनपद काल 26
- बौद्ध और जैन धर्म 29
- मौर्य वंश 34
- संगम युग 37
- मौर्योत्तर काल 40
- गुप्तवंश 41
- गुप्तोत्तर काल 43


### मध्य कालीन भारत


- तुर्क आक्रमण 49
- बहमनी साम्राज्य 52
- मुगल साम्राज्य 55
- भक्ति आन्दोलन 58
- उत्तरकालीन मुगल सम्राट 61
- मराठा और अन्य राज्य 63


### आधुनिक भारत ( 76-135 )


- यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों का भारत में आगमन और अंग्रेजों का भारत विजय
- आधुनिक भारतीय शिक्षा का विकास
- धर्म तथा समाज सुधार आन्दोलन
- 1857 की क्रांति
- बिट्रिश लैंड रैवेन्यू पॉलिसी
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) का जन्म
- स्वराज के लिये संघर्ष- 1919 से 1927
- स्वराज के लिये संघर्ष- 1927 से 1947
- संवैधानिक विकास
- अंग्रेजी शासन के अंतर्गत भारतीय प्रेस
- भारत के गवर्नर जनरल

# प्राचीन भारत

## इतिहास के साक्ष्य एवं स्त्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निमाण के स्त्रोत प्राचीन भारतीय इतिहास की पुनः संरचना के लिए प्रयुक्त स्त्रोत सामग्री की आवश्यकता होती है। लेकिन स्वयं स्त्रोत अतीत को हमारे सामने नहीं लाते। उन्हें व्याख्या की ज़रूरत होती है और इतिहासकार उन स्त्रोतों को वाणी देते हैं। वास्तव में इतिहासकार से अपेक्षा की जाती है कि सार्थक रूप से समझाने के लिए वह स्त्रोत को ढूँढे, पाठों को पढ़े, सुरागों का पीछा करें, उपयुक्त प्रश्न उठाए और प्रमाणों की सत्यता की जाँच करे। उदाहरण के लिए सन 1826 में चार्ल्स मेसन ने पश्चिमी पंजाब के हड़प्पा गाँव में (जो अब पाकिस्तान में है) किसी पुरानी बस्ती की ऊँची-ऊँची दीवारें और मीनारें देखीं और इसके पाँच दशक बाद सर अलेक्जेंडर कनिंघम ने उसी स्थान से कुछ सील मुहरें एकत्रित की लेकिन इसके भी पचास वर्ष बाद जाकर पुरातत्त्ववेत्ता जॉन मार्शल ने वहाँ सिंध क्षेत्र की प्राचीनतम सभ्यता की पहचान की। इतिहासकार तरह-तरह के साक्ष्यों की पुष्टि कैसे करते हैं। राजा हर्षवर्धन (ईसा की सातवीं शताब्दी) से जुड़े किसी भी स्त्रोत में हमें चालुक्य पुलकेशिन द्वितीय के हाथों उनकी पराजय का उल्लेख नहीं मिलता है, लेकिन राजा पुलकेशिन द्वितीय के एक शिलालेख में उनके द्वारा हराने का दावा किया गया है। इस स्थिति में यह स्पष्ट हो जाता है कि हर्ष की जीवनी, हर्षचरित्र के लेखक बाणभट्ट ने जानबूझकर अपने आश्रयदाता की पराजय का उल्लेख नहीं किया है।

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है, 'ऐसा हुआ'। अंग्रेजी में इसका अनुवाद History (हिस्ट्री) किया जाता है। एक समय था जब लिखित अभिलेखों को ही इतिहास का प्रामाणिक स्त्रोत माना जाता था। लिखित सामग्री की सत्यता जाँची जा सकती है, उसे उद्धृत किया जा सकता है और अन्य स्त्रोतों से उसकी पुष्टि भी की जा सकती है। मिथक, लोकगीत आदि मौखिक साक्ष्यों को सही स्त्रोत माना ही नहीं जाता था। प्रारंभिक इतिहासकार मिथकों, कथाओं और मौखिक परंपराओं का सहारा नाममात्र को ही लेते थे क्योंकि न तो उनके सही होने का कोई प्रमाण होता था, और न उनकी सच्चाई की जाँच हो सकती थी। लेकिन आज अनेक नए तरीकों से गैर पारंपरिक स्त्रोतों का उपयोग हो रहा है। परंपराओं और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का अध्ययन अन्य ऐतिहासिक तथ्यों की रोशनी में होना चाहिए। उदाहरण के लिए, महाभारत दो भाइयों की संतानों के बीच हुए संघर्ष की गाथा है।

हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि इस महाकाव्य में वर्णित युद्ध सचमुच हुआ था या नहीं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह युद्ध वास्तव में हुआ था, जबकि कुछ अन्य इतिहासकार दूसरे स्त्रोतों से पुष्टि हुए बिना इस बात को मानने को तैयार नहीं हैं। मूल कथा शायद सूतों द्वारा रची गई हो जो आम तौर पर क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्ध क्षेत्र में जाते थे और उनकी विजयों तथा अन्य उपलब्धियों की प्रशंसा में काव्य रच-रचकर सुनाते थे। ये रचनाएँ मौखिक रूप में ही प्रसारित होती थीं और मानव स्मृति का एक हिस्सा बनकर सुरक्षित बची रहीं।

**धार्मिक साहित्य**

भारत की अधिकतम प्राचीन रचनाएँ धर्म से संबद्ध रही हैं। इन्हें वेद कहा जाता है। इनका रचनाकाल1500 ई.पू. से 500 ई.पू. के लगभग माना जाता है। वेदों की संख्या चार है। ऋग्वेद में मुख्य रूप से प्रार्थनाएँ ही हैं। अन्य तीन वेदों- साम, यजुर और अथर्व में प्रार्थनाएँ, अनुष्ठान, मंत्र और पुराण कथाएँ हैं। उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा संबंधी दार्शनिक विवेचन है। इन्हें वेदांत भी कहा जाता है।

रामायण और महाभारत, इन दो महाकाव्यों का संकलन अनुमानतः ईस्वी सन् 400 तक जाकर पूरा हुआ होगा। इनमें से 'महाभारत' के रचनाकार व्यास मुनि माने जाते हैं। इसमें मूलतः 8800 श्लोक थे और इसका नाम 'जय-गीत' अर्थात विजय गान था। आगे चलकर इसका विस्तार 24,000 श्लोकों में हो गया और इसे 'भारत' कहा जाने लगा क्योंकि इसमें प्राचीनतम वैदिक वंशो में से एक भरतवंश के उत्तराधिकारियों की गाथाएँ हैं। इसके एक और विस्तृत संस्करण 'महाभारत' में 1,00,000 श्लोक हैं। इसी प्रकार मूलतः वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में 6000 श्लोक थे, मगर आगे चलकर इसका विस्तार 12000 और फिर 24000 श्लोकों में हो गया।

उत्तर-वैदिक (वेदों के बाद वाले) काल (600 ई.पू. के बाद) में हमें अनुष्ठान संबंधी ढेर सारा धार्मिक साहित्य मिलता है जिसे सूत्र कहते हैं। राजाओं द्वारा बड़े-बड़े बलि यज्ञ आदि के विधान 'श्रौतसूत्र' में मिलते हैं जबकि जन्म, नामकरण,